RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER

SYLLABUS FOR EXAMINATION FOR THE POST OF LECTURER IN **HINDI** (SCHOOL EDUCATION)

PAPER-II

खण्ड–I (उच्च माध्यमिक स्तर)

क. अपठित गद्य :– ज्ञान, अर्थग्रहण, आधारित प्रश्न

ख. अपठित पद्य :– ज्ञान, अर्थग्रहण, समालोचना आधारित प्रश्न

ग. व्यावहारिक लेखन

(i) कार्यालयी लेखन– औपचारिक पत्र, टिप्पण, अनुस्मारक, अर्ध–सरकारी पत्र, प्रेस–विज्ञप्ति, परिपत्र, कार्यसूची, कार्यवृत्त

(ii) स्ववृत्त (Biodata), आवेदन–पत्र लेखन

(iii) शब्दकोश एवं साहित्यकोश, रचना एवं उपयोग–पद्धति

(iv) व्याकरण का सामान्य ज्ञान– संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विलोम शब्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि, शब्द–युग्म, वाक्यांश के लिए एक शब्द, अनेकार्थी शब्द

घ. जन–संचार माध्यमों के लिए लेखन

(i) जनसंचार के प्रमुख माध्यम और तत्सम्बन्धी लेखन

ड. सृजनात्मक लेखन

(i) कविता, कहानी, नाटक, डायरी, रेडियो–नाटक, विषयक लेखन

च. 'अन्तरा' भाग–2 एवं 'आरोह' भाग–2 पुस्तकों में संकलित कविताओं पर काव्य सौन्दर्य– केन्द्रित प्रश्न।

छ. 'अन्तरा' भाग– 2 एवं 'आरोह' भाग–2 पुस्तकों में संकलित गद्य रचनाओं पर विषय–वस्तु, विचार, संवेदना और भाषा पर केन्द्रित प्रश्न।

ज. 'अन्तराल' भाग–2 तथा 'वितान' भाग–2 पुस्तकों में संकलित रचनाओं पर विषय–वस्तु एवं युग चेतना पर केन्द्रित प्रश्न।

खंड II (स्नातक स्तर)

हिन्दी साहित्य का इतिहास

(1) हिन्दी साहित्य का इतिहास– इतिहास–लेखन की पद्धतियाँ, इतिहास–लेखक

हिन्दी साहित्य का आरम्भ, काल–विभाजन और नामकरण, आदिकाल के अध्ययन की प्रमुख समस्याएँ– भाषा और प्रामाणिकता से संबंधित समस्याएँ।

आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाकार एवं प्रमुख रचनाओं का परिचय

(2) भक्ति आन्दोलन का उदय, विकास और दार्शनिक पृष्ठभूमि

संत काव्य– विशेषताएँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

सूफी काव्य– विशेषताएँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

रामभक्ति काव्य– विशेषताएँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

कृष्ण भक्ति काव्य– विशेषताएँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

रीतिकाव्य– रीति से तात्पर्य, मुख्य काव्यधाराएँ– रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त काव्य की विशेषताएँ, रचनाकार एवं रचनाओं का परिचय

(3) हिन्दी नवजागरण, भारतेन्दु तथा भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकार।

- महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग
- छायावाद के प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
- प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और समकालीन कविता

(4) हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास

- हिन्दी–उपन्यास का आरम्भ और विकास– प्रेमचन्द पूर्व, प्रेमचंदयुगीन तथा प्रेमचंदोत्तर उपन्यास की प्रमुख प्रवृतियाँ
- हिन्दी–निबंध का उद्भव व विकास, प्रमुख निबंधकार
- हिन्दी–कहानी का आरम्भ व विकास, प्रमुख कहानीकार
- हिन्दी–नाटक का उद्भव व विकास, प्रमुख नाटककार
- हिन्दी–गद्य की अन्य विधाएँ– आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र तथा रिपोर्ताज

काव्यशास्त्र

1. शब्द शक्ति – अभिधा, लक्षणा, व्यंजना
2. अलंकार – यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, भ्रान्तिमान, दृष्टान्त, उदाहरण, व्यतिरेक, प्रतीप, विरोधाभास, असंगति, विभावना, अन्योक्ति, वक्रोक्ति, अर्थान्तरन्यास, व्याजस्तुति, मानवीकरण।
3. छंद – दोहा, चौपाई, सोरठा, रोला, उल्लाला, गीतिका, हरिगीतिका, कवित्त, सवैया, छप्पय, कुण्डलिया, मंदाक्रान्ता, वंशस्थ, वसंततिलका, मालिनी, द्रुतविलम्बित बरवै।
4. काव्य–गुण – माधुर्य, ओज और प्रसाद।
5. काव्य–रस – रस का स्वरूप, रसावयव–विभाव, अनुभाव, संचारी भाव, विभिन्न रसों के लक्षण, उदाहरण।
6. अन्य – बिम्ब, प्रतीक, मिथक, फैंटेसी।

(खंड – III स्नातकोत्तर स्तर)

क. काव्य के लक्षण, काव्य के प्रयोजन एवं काव्य के हेतु

ख. रसनिष्पत्ति, साधारणीकरण एवं ध्वनि–सिद्धान्त

ग. अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त एवं लोंजाइनस का उदात्त तत्त्व.

खण्ड IV– (शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र, शिक्षण–अधिगम सामग्री, कम्प्यूटर एवं सूचना तकनीकी का शिक्षण–अधिगम में उपयोग)

1. शिक्षण–अधिगम में मनोविज्ञान का महत्व :

- अधिगमकर्ता
- शिक्षक
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया
- विद्यालय प्रभावशीलता

2. अधिगमकर्ता का विकास : किशोर अधिगमकर्ता में

- संज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक संवेगात्मक एवं नैतिक विकास के प्रतिमान (Patterns) एवं वैशिष्ट्य (characteristics).

3. शिक्षण–अधिगम :

- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए – व्यवहारवादी, संज्ञानवादी और निर्मितिवादी (constructivist) सम्प्रत्यय, अधिगम के सिद्धान्त एवं इनके निहितार्थ।
- किशोर अधिगमकर्ता की अधिगमकर्ता की अधिगम–विशेषताएँ एवं इनके शिक्षण के लिए निहितार्थ।

4. किशोर –अधिगमकर्ता प्रबंधन :

- मानसिक –स्वास्थ्य एवं समायोजन –समस्याओं का सम्प्रत्यय
- किशोर के मानसिक स्वास्थ्य के लिए संवेगात्मक –बुद्धि एवं इसके निहितार्थ।
- किशोर के मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित (परिपोषित) करने की मार्गदर्शक प्रविधियों का उपयोग

5. किशोर –अधिगमकर्त्ता के लिए अनुदेशनात्मक व्यूहरचनाएँ :

- सम्प्रेषण कौशल एवं इसके उपयोग।
- शिक्षण की अवधि में, शिक्षण–अधिगम सामग्री का आयोजन एवं उपयोग।
- शिक्षण –प्रतिमान– अग्रिम संगठन, वैज्ञानिक–पृच्छा (enquiry), सूचना, प्रक्रम (processing), सहकारी अधिगम (cooperative).
- शिक्षण– आधारित निर्मितिवादी– सिद्धान्त (constructivist principles).

6. सूचना सम्प्रेषण तकनीकी शिक्षाशास्त्र समाकलन :

- सूचना सम्प्रेषण तकनीकी (ICT) का सम्प्रत्यय
- हार्डवेयर (hardware) एवं सॉफ्टवेयर (software) का सम्प्रत्यय
- प्रणाली–उपगाम से अनुदेशन
- कम्प्यूटर सहायता प्राप्त अधिगम (CAL)
- कम्प्यूटर सहायता प्राप्त अनुदेशन (CAI)
- आई.सी.टी. शिक्षाशास्त्र समाकलन को प्रभावित करने वाले कारक।

Paper – II Subject Concerned

Duration : 3 Hour

S.No.	Subject	No. of Questions	Total Marks
1	Knowledge of Subject Concerned : Senior Secondary Level	55	110
2	Knowledge of Subject Concerned : Graduation Level	55	110
3	Knowledge of Subject Concerned : Post Graduation Level	10	20
4	Educational Psychology, Pedagogy, Teaching Learning Material, Use of Computers and Information Technology in Teaching Learning.	30	60
	Total	**150**	**300**
Note : 1 All the question in the Paper shall be Multiple Choice Type Question.			
2 Negative marking shall be applicable in the evaluation of answers. For every wrong answer one-third of the marks prescribed for that particular question shall be deducted. Explanation : Wrong answer shall mean an incorrect answer or multiple answer.			